सांस्कृतिक विरासत की परत दर परत पड़ताल

नामवर सिंह ने किया भुवनेश्वर की जन्मशती पर आयोजित दो दिवसीय समारोह का उदघाटन

बीसवीं सदी का अर्थ : जन्मशती का संदर्भ श्रृंखला का पांचवां आयोजन

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत को नई पीढी में संचारित करने के उद्देश्य से महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के इलाहाबाद केंद्र द्वारा बीसवीं सदी का अर्थ : जन्मशती का संदर्भ श्रृंखला के अंतर्गत बीसवीं सदी के प्रथम एकांकीकार व नाटककार भुवनेश्वर की जन्मशती पर भुवनेश्वर एकाग्र विषय पर आयोजित दो दिवसीय (10-11 सितम्बर, 2011) समारोह का उद्घाटन साहित्य आलोचक व विश्वविद्यालय के कुलाधिपति नामवर सिंह ने किया। समारोह में समय और समाज की कसौटी पर परखते हुए भुवनेश्वर के जीवनसंघर्ष और उनकी रचनाओं की परत दर परत पड़ताल की गई।

व्यक्ति के रूप में भुवनेश्वर पर विमर्श करते हुए नामवर सिंह ने कहा कि भुवनेश्वर अपने दौर के अद्भुत रचनाकार थे। उनकी गद्य लिखने की शैली, फैंटेसी रचने की कला अनूठी थी। नाटकों में भी उन्होंने कई प्रयोग किए। ऐतिहासिक और सामाजिक विषयों पर लिखे नाटकों में भुवनेश्वर की अद्भूत कल्पनाशीलता नज़र आती है। भूले-बिसरे नाटककार को याद करना देश के किसी भी विश्वविद्यालय का पहला आयोजन है। ऐसे वैचारिक विमर्श से हम भुवनेश्वर के कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।

स्वागत वक्तव्य में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति **विभूति नारायण राय** ने कहा कि यह वर्ष नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर, अज्ञेय, भुवनेश्वर तथा उर्दू के शायर फैज़ अहमद फैज़ का जन्मशताब्दी का है। पिछली सदी के सौ वर्षों में इस महाद्वीप में जितनी बड़ी घटनाएं घटी, उन्हें समझने के लिए हमें उन महान साहित्यिक चिंतकों के पास जाना जरूरी है। बीसवीं शताब्दी बहुत उथल-पुथल वाली रही है तथा क्रांतिकारी परिवर्तनों की साक्षी भी। उन मुद्दों पर विचार-विमर्श करने तथा पूरी शताब्दी का आकलन करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा शताब्दी श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है। देश के एकमात्र अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय होने के कारण हमारा यह दायित्व है कि उच्च शिक्षा में शोधपरक पठन-पाठन के अलावा अपने साहित्यिक पुरोधाओं की रचनाओं का भी पुनर्मूल्यांकन करें।

रंगकर्मी भनुभारती ने कहा कि भुवनेश्वर अपने जीवन के दशकों बाद नाट्य अध्ययन की परम्परा से गायब रहे लेकिन अब वे अपरिहार्य स्थान ग्रहण कर रहे हैं। भुवनेश्वर समग्र का संपादन कर रहे साहित्यकार दूधनाथ सिंह ने भुवनेश्वर की खोज-प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए कहा कि भुवनेश्वर प्रेमचंद की खोज थे। प्रेमचंद ने हंस में न केवल उनके पांच नाटकों को प्रकाशित किया था बल्कि स्वयं ही उनकी समीक्षा भी लिखी।

कवि व कथाकार के रूप में भुवनेश्वर पर केंद्रित द्वितीय अकादमिक सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ कथाकार व वर्धा विश्वविद्यालय के अतिथि लेखक से.रा.यात्री ने कहा कि धन का विकर्षण जितना भुवनेश्वर में था उतना ही निराला में भी। भुवनेश्वर की रचनात्मकता को बहुल अर्थों में तलाश करनी चाहिए। उनके द्वारा रची गई अमूल्य रचनाओं को अगली पीढ़ी के लिए जीवित रखना है।

इसी सत्र में आधार वक्तव्य देते हुए वरिष्ठ साहित्यकार दूधनाथ सिंह ने भुवनेश्वर के लेखन को तटस्थ और सटीक बताया। बोले, उनके नाटकों में तटस्थ आलोचना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। कोलोनियल दुनिया में अंग्रेजों की ओर से पाले गए खाते-पीते उच्च मध्य वर्ग के ड्राइंगरूम का बेबाक वर्णन करने वाले भुवनेश्वर छायावाद की रूमानियत को नकारते हैं। वे कहते थे, आजादी विशेषज्ञों की चीज है, न कि देश और जनता की, ये आजादी चाहते हैं पर परिवर्तन नहीं। उन्होंने कहा कि भुवनेश्वर ने पहली कविता ब्रज भाषा में 1925 ई.में लिखी, जो माधुरी में छपी थी। यह कविता सघन राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत थी। उनकी रचनाएं महादेवी वर्मा की चांद, माधुरी और सहेली पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थी। उन्होंने बताया कि भुवनेश्वर के जन्म के बारे में मतभेद है। राजकुमार शर्मा की मानें तो वे 1912 ई. में पैदा हुए। पत्र में छपे तथ्यों को मानें तो सन् 1914 में पैदा हुए लेकिन मैं मानता हूं कि वे सन् 1910 में पैदा हुए। उनकी बहुत सारी कविताएं उपलब्ध नहीं हैं। जो अनुवाद शमशेर के हैं, वे श्रेष्ठ हैं। उनकी सात कहानियां हिंदी की श्रेष्ठतम रचनाओं में शामिल हैं।

वक्ता के रूप में सुषमा भटनागर ने कहा कि आज शताब्दी वर्ष में भुवनेश्वर को याद किया जा रहा है, यह बहुत अच्छा प्रयास है। रहस्य रोमांच के बारे में कहा जाय तो वे स्त्री-पुरूष संबंध को एक अलग दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं। भुवनेश्वर, कहानी का नया विहान लेकर आते हैं। उनकी कृतियों पर शोध हों और वे पाठ्यक्रमों का हिस्सा बने और ये कहीं चोर दरवाजे से नहीं आएं अपितु खुले दरवाजे से स्वागत किया जाना चाहिए। भुवनेश्वर को फ्रेम में अटाने की कोशिश की जाती हैं, का जिक्र करते हुए साहित्यकार अनुपम आनन्द कहते हैं कि वे विसंगति बोध के कवि नहीं बल्कि जीवन की आस्था के कवि हैं। वे मध्यमवर्गीय आदर्शवाद को तोड़ते हैं। भुवनेश्वर की उपेक्षा का बहुत बड़ा कारण है कि उन्हें समझा नहीं गया। **साहित्य आलोचक रविभूषण** ने कहा कि किसी भी रचनाकार की जो मानसिक स्थिति निर्मित होती है इसके लिए परिवार, उसका समाज और समय काम करता है। उनकी रचनात्मकता को पश्चिमी प्रभाव में नहीं देखा जाना चाहिए। आज हमें भुवनेश्वर पर बातचीत करने के लिए ही नहीं अपितु बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक पर पुनर्विचार करने की जरूरत है। भुवनेश्वर की कहानी- भेड़िये, नदी के दोनों पार, मौसी पर टिप्पणी करते हुए वे कहते हैं कि उनके रचनाकर्म को प्रेमचंद के महाजनी सभ्यता से जोड़ कर देखने की जरूरत है। प्रेमचंद की भांति भुवनेश्वर ने भी कभी धन को महत्व नहीं दिया।

तृतीय अकादमिक सत्र में नाटककार के रूप में भुवनेश्वर पर विमर्श हुआ। रंगनिर्देशक भानुभारती ने अध्यक्षीय वक्तव्य में भुवनेश्वर के नाटकों को जिंदगी के कोलाज की संज्ञा दी। साहित्यकार नीलाभ ने आधार वक्तव्य में कहा कि कथ्य के साथ भुवनेश्वर के कहने का तरीका अनूठा था। वक्ता के रूप में मीराकांत बोलीं, भुवनेश्वर समय की चाल समझते थे। उनकी अभिव्यक्ति में शब्दों से अधिक दृश्य हैं। उनका दूसरा नाम मुसलसल बेचैनी कहा जाए तो बेमानी नहीं। रंगनिर्देशक आतमजीत सिंह व राजकुमार शर्मा ने भी भुवनेश्वर की नाट्य विधा की खूबियां और बारीकियां बताई।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के इलाहाबाद केंद्र के प्रभारी व बीसवीं सदी का अर्थ : जन्मशती का संदर्भ श्रृंखला के संयोजक प्रो. संतोष भदौरिया ने समारोह का संचालन करते हुए कहा कि इन आयोजनों से अपने वरिष्ठ कवियों, साहित्यकारों को आज के सन्दर्भ में मूल्यांकित करने का विनम्र प्रयास है। विश्वविद्यालय द्वारा देशभर में शताब्दी श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है। यह समारोह समानान्तर, इलाहाबाद के सहयोग से आयोजित किया गया। इसके पूर्व विश्विद्यालय द्वारा वर्धा, पटना, इलाहाबाद, बांदा में जन्मशताब्दी समारोह आयोजित कर रचनाकारों को याद किया गया। अगले माह विश्वप्रसिद्ध शायर फ़ैज अहमद फ़ैज के जन्मशती पर अंतरराष्ट्रीय समारोह का आयोजन किया जाएगा।

नाटक का हुआ मंचन- भुवनेश्वर के जीवन पर आधारित मीराकांत द्वारा लिखित नाटक भुवनेश्वर दर भुवनेश्वर एवं भुवनेश्वर द्वारा लिखित नाटक तांबे के कीड़े एवं श्यामा : एक वैवाहिक बिडंबना के मंचन से जन्मशताब्दी समारोह का समापन हुआ। तीनों नाटकों की परिकल्पना एवं निर्देशन अनिल रंजन भौमिक द्वारा तथा प्रस्तुति समानान्तर, इलाहाबाद द्वारा की गई।

फोटो कैप्शन- 1. भुवनेश्वर एकाग्र पर आयोजित दो दिवसीय समारोह में उद्घाटन वक्तव्य देते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति नामवर सिंह मंच पर बाएं रंगकर्मी भानु भारती कुलपति विभूति नारायण राय व दाएं साहित्यकार दूधनाथ सिंह।

फोटो कैप्शन- 2. भुवनेश्वर एकाग्र पर आयोजित दो दिवसीय समारोह के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित श्रोता।

प्रस्तुति- अमित कुमार विश्वास
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
मो. 09970244359
ई.मेल- amitbishwas2004@gmail.com
amitbishwas2004@yahoo.co.in